कक्षा–12

सूर्यकान्त त्रिपाठी 'निराला'

संक्षिप्त परिचय–

- **जन्म**– सन् 1897 ई.।
- **जन्म स्थान**–मेदिनीपुर (बंगाल)
- **पिता का नाम**– श्री रामसहाय त्रिपाठी।
- **भाषा**–शुद्ध संस्कृतनिष्ठ, प्रगतिवादी काव्य में सरल भाषा
- **शैली**–कठिन तथा दुरूह एवं सरल तथा सुबोध
- **मृत्यु**– सन् 1961 ई०।

जीवन–परिचय–

महाकवि निराला का जन्म बंगाल के महिषादल राज्य के मेदिनीपुर जिले में 1899 ई० में हुआ था। माँ द्वारा सूर्य का व्रत रखने तथा निराला के रविवार के दिन जन्म लेने के कारण इनका नाम सूर्यकान्त रखा गया, परन्तु बाद में साहित्य के क्षेत्र में आने के कारण इनका उपनाम 'निराला' हो गया।

निराला जी के पिता पण्डित रामसहाय त्रिपाठी उत्तर प्रदेश के बैसवाड़ा क्षेत्र के जिला उन्नाव के गढ़कोला ग्राम के निवासी थे तथा महिषादल राज्य में रहकर राजकीय सेवा में कार्य कर रहे थे।

माता-पिता के असामियिक निधन, फिर पत्नी की अचानक मृत्यु , पुत्री सरोज की अकाल मृत्यु आदि ने निराला के जीवन को करूणा से भर दिया। बेटी की असामियिक मृत्यु की अवसादपूर्ण घटना से व्यथित होकर ही इन्होंने 'सरोज-स्मृति' नामक कविता लिखी। कबीर का फक्कड़पन एवं निर्भीकता, सूफियों का सादापन, सूर-तुलसी की प्रतिभा और प्रसाद की सौन्दर्य-चेतना का मिश्रित रूप निराला के व्यक्तित्व में झलकता है। इन्होंने कलकत्ता में अपनी रूचि के अनुरूप रामकृष्ण मिशन के पत्र 'समन्वय' का सम्पादन-भार सँभाला। इसके बाद 'मतवाला' के सम्पादक मण्डल में भी सम्मिलित हुए। इसके बाद लखनऊ में 'गंगा पुस्ताकमाला'

का सम्पादन तथा 'सुधा' पत्रिका के लिए सम्पादकीय भी लिखने लगे। जीवन के उत्तरार्द्ध में ये इलाहाबाद चले आए। इनकी आर्थिक स्थिति अत्यन्त विषम हो गई। आर्थिक विपन्नता भोगते हुए 15 अक्टूबर 1961 को ये चिरनिद्रा में लीन हो गए।

प्रमुख कृतियाँ

प्रमुख काव्य-ग्रन्थों में आराधना, अनामिका, अपरा, अर्चना, अणिमा, परिमल, गीतिका, तुलसीदास, राम की शक्ति पूजा, सरोज-स्मृति, नए पत्ते, आदि उल्लेखनीय है।

ट्रिक- आ अ^4 प गी तु रा स न